‘तीर : 1993 : अंतर्राष्ट्रीय आदिवासी वर्ष में’ कहानी में आदिवासियों में शैक्षिक चेतना

श्री. सुरेश आनंदा मोरे
शोधछात्र, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
मो.नं. 9881424318

शोधालेख का सार

आज भी आदिवासी समाज शैक्षिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ नजर आता है। यही बात उनकी उन्नति में सबसे बड़ा रोड़ा है। इसके लिए आदिवासी इलाके की प्रतिकूल परिस्थिति भी जिम्मेदार है। इस प्रतिकूल परिस्थिति पर मात करते हुए धीरे-धीरे उनमें शैक्षिक चेतना जगती हुई दिखाई देती है। इसी का चित्रण महाश्वेता देवी के ‘आदिवासी कथा’ कहानी-संग्रह की ‘तीर : 1993 : अंतर्राष्ट्रीय आदिवासी वर्ष में’ कहानी में भी मिलता है। इसमें लेखिका ने आदिवासियों के शैक्षिक स्थिति पर भी प्रकाश डाला है।

बीज शब्द : आदिवासी शैक्षिक चेतना, महाश्वेता देवी, ‘तीर : 1993 : अंतर्राष्ट्रीय आदिवासी वर्ष में’ कहानी, आदिवासी।

जल, जंगल और जमीन से निष्कासित करने के कारण आदिवासी समाज को अपने अस्तित्व के लिए झगड़ना पड़ रहा है। आदिवासी लोगों के अज्ञान का फायदा उठाते हुए जमींदार, महाजन, नौकरशाह जैसे प्रस्थापित समाज लोग अमीर बनते जा रहे हैं लेकिन आदिवासियों की स्थिति जस-की-तस दिखाई देती है। उन्हें जंगल से निष्कासित करने के कारण रोजी-रोटी के लिए भटकना पड़ रहा है। इस संदर्भ में डॉ. अर्जुन चव्हाण लिखते हैं-“आधुनिकता के इस माहौल में हमारे देश का मूल निवासी अर्थात् आदिवासी समाज जैसा और जहाँ था, वैसा और वहीं है। एकाध अपवाद अगर छोड़ दें तो कहना सही होगा कि हमारे यहाँ सबसे अधिक वंचित, उपेक्षित और अभावग्रस्त आदिवासी समाज ही रहा है।”[1] इस प्रकार आदिवासी समाज आज भी वंचित और उपेक्षित है। धीरे-धीरे उन्हें इस बात का एहसास होने लगा है। इसलिए तो उनमें शिक्षा संबंधी चेतना जगती हुई दिखाई देती है। इस शैक्षिक चेतना का चित्रण लेखिका महाश्वेता देवी के ‘आदिवासी कथा’ कहानी-संग्रह में मिलता है। इस कहानी संग्रह की ‘तीर : 1993 : अंतर्राष्ट्रीय आदिवासी वर्ष में’ कहानी में आदिवासी समाज में सुधार हेतु आदिवासी कार्यकर्ता प्रतिकूल परिस्थिति में किसप्रकार स्कूल खोलने का प्रयास करते हैं, इसका चित्रण मिलता है।

‘तीर : 1993 : अंतर्राष्ट्रीय आदिवासी वर्ष में’ यह महाश्वेता देवी की लंबी कहानी है। इसमें आदिवासी समाज की व्यथा, प्रस्थापित समाज द्वारा उनका किया जानेवाला शोषण, महाजनों द्वारा उनकी जमीन पर अवैध रूप से कब्जा, उनकी अपने ही जमीन से होनेवाली बेदखली, अशिक्षा, अज्ञान तथा आदिवासी समाज में जग रही शैक्षिक चेतना का प्रधानता से चित्रण किया गया है। शिक्षा ही एकमात्र साधन है, जो मनुष्य को अपने अधिकारों के प्रति सचेत बनाता है। इस बात को आदिवासी समाज के थोड़े-बहुत पढ़े हरिचरण, चांदो, भुंइमाली, कालीप्रद, शालकांद मुर्मू जैसे लोगों ने जानने के कारण ही वे आदिवासी भाटागेड़ा गाँव में स्कूल खोलना चाहते हैं। इसमें उन्हें सफलता मिलती है लेकिन आदिवासी समाज शिक्षित होकर अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो गया तो अपना भ्रष्टाचार, अन्याय-अत्याचार बर्दाश्त नहीं करेगा इसलिए प्रस्थापित व्यवस्था किस प्रकार उन्हें तकलीफ देती है, पुलिस द्वारा किस प्रकार स्कूल और स्कूल खोलनेवाले कार्यकर्ताओं पर खुफिया लोगों द्वारा नजर रखी जाती है, इसका भी चित्रण प्रस्तुत कहानी में महाश्वेता देवी ने बेहतरीन ढंग से किया है।

आदिवासी भाटागेडा गाँव और परिसर में एक भी स्कूल नहीं है। इसलिए आदिवासी कार्यकर्ता हरिचरण शालकांद जैसे लोग स्कूल खोलना चाहते हैं। इस संदर्भ में हरिचरण कहता है-“शालकांद, आसपास कोई इस्कूल नाहीं है। हम लोग जल्दी इस्कूल खोलें और तीन बरस चलाते रहें, तो सरकार भी मान लेवेगी! फिर...”[2] इस प्रकार हरिचरण अपने साथियों के सहयोग से आदिवासी बच्चों को पढ़ाने के लिए स्कूल खोलना चाहते हैं। वह जानता है कि अगर निजी तौर पर तीन साल ठीक से स्कूल चलाया तो अपने-आप सरकारी अनुदान शुरू हो जाएगा। तब तक निजी तौर पर स्कूल चलाने आदिवासी समाज में थोड़े-बहुत पढ़े भुंइमाली, कालीप्रसाद, चांदो की पढ़ाने के लिए मदद लेने का निर्णय लिया जाता है। उनके पास पैसा न होने के कारण वे स्कूल के लिए साहुकार चंद्रकांत बेरा के पास जमीन गिरवी रखने का निर्णय लेते हैं। प्रस्तुत कहानी में चंद्रकांत बेरा ऐसा पात्र है जो आदिवासी किसानों के कोरे कागज अंगुठे लेकर कर्ज देता है। यह जमीन व बाद में हड़प लेता है।

आदिवासी कार्यकर्ताओं में शिक्षा संबंधी चेतना जगने के कारण वे स्कूल के लिए बेंच, ब्लैक बोर्ड आदि सामान इकट्ठा करना शुरू करते हैं। इस संदर्भ में महाश्वेता देवी लिखती हैं-“उसने वगो भाइती की बनाई हुई टेढ़ी-मेढ़ी बेंचें भी देखीं। ब्लैकबोर्ड भी हाथी की तरह भारी था। ठीक चौकोर भी नहीं था और नाप में एक तरफ जरा छोटा भी था।”[3] इससे स्पष्ट होता है कि आदिवासी

इलाके में स्कूल खोलने के लिए कितनी मशक्कत करनी पड़ती है। स्कूल के लिए यह इकट्ठा किया गया सामान भलेही दिखाने में सुंदर नहीं था लेकिन मजबूत था। प्रस्तुत कहानी में आदिवासी लोग धीरे-धीरे उन्नति की राह पर अग्रसर होते दिखाई देते हैं। अन्य कार्यों के साथ स्कूल खोलने की दृष्टि से मशक्कत यह भी इसका अच्छा उदाहरण है। आदिवासियों जगी नई चेतना के संदर्भ में लेखिका महाश्वेता देवी लिखती हैं-"भाटागेड़ा में इन दिनों पुराने को पुनर्जीवित करके, वंचित आदिवासी और अन्य शोषितों के मन में, काफी तेजी से एक नई चेतना घर करती जा रही थी।"[4] इस प्रकार आदिवासी समाज में एक नई चेतना जग जाती है।

स्कूल शुरू करने के बाद नए ज्ञान-विज्ञान के साथ जुड़ने के लिए आदिवासी कार्यकर्ता स्कूल के लिए किताबें खरीदना चाहते हैं। ये किताबें बच्चे और पढ़े-लिखे आदिवासियों की दृष्टि से भी खरीदी जाती है। ये किताबें दिन में बच्चों पढेंगे और रात के समय कार्यकर्ता भी पढ़ेंगे, इसप्रकार इसका दोहरा उद्देश्य है। भाटागेड़ा में शुरू किए आदिवासी प्राइमरी विद्यालय का भी दोहरा उद्देश्य था। दिन में वह बच्चों को पढ़ने के लिए था तो रात में आदिवासी कार्यकर्ता के विचार-विमर्श का केंद्र था। इस संदर्भ में कहानी में लिखा है-"दिन के वक्त पहला सत्र, रात को सभी के साथ मिलकर उठना-बैठना, इस तरह भाटागेडा में आदिवासी प्राथमिक विद्यालय की शुरुआत हुई। जमीन पर जल्द से जल्द किसका अधिकार हो, कृषक-संग्राम, रूस-चीन...यहाँ सभी विषयों पर बातचीत होती थी। चांदो अपने छात्र-छात्राओं को बेंत की शंटी मार-मारकर पढ़ाता था! दोपहर के वक्त वह तीर चलाने का अभ्यास करता था।"[5] इस प्रकार बहुत प्रतिकूल परिस्थिति में प्रकृति के गोद में आदिवासी बच्चों का स्कूल शुरू हो जाता है। अध्यापक चांदो बच्चों को नियमित रूप में पढ़ाता भी है और तीर चलाने भी सिखाता है। क्योंकि चांदो एक अध्यापक भी है और अच्छा शिकारी भी। प्रस्तुत कहानी में कम होती जा रही जंगली प्राणियों की संख्या की ओर भी निर्देश किया है।

आदिवासी अपने अधिकारों और विकास की दृष्टि से सचेत होते देख पुलिस नक्सली कार्रवाइयों की आशंका से उनकी हलचलों निगरानी रखना शुरू करते हैं। प्रस्थापित व्यवस्था द्वारा आदिवासी भाटागेड़ा आदिवासी विद्यालय पर नजर रखने के लिए खबरियों की नियुक्ति की जाती है। यह खबरिया इस स्कूल में चल रही सभी गतिविधियों की पूरी जानकारी पुलिस को देते रहते हैं। इस संदर्भ में महाश्वेता देवी ने लिखा है- "भाटागेड़ा आदिवासी प्राथमिक विद्यालय के बारे में, लहर थानों के बड़े बाबू, नन्ददुलाल राय पूरी नजर रखता था। उसने खबर लाने के लिए खबरिया भेजा! श्वेतकेशी बूढ़ी, दुकानदार घोचू, हाट में आश्चर्य मलहम और जयन्ती दंतचूर्ण बेचनेवाला, दिलीप! इस किस्म के खबरी, पुलिस के पे-रोल पर होते हैं।"[6] इस प्रकार ये खबरिया लोग पूरी स्कूल के बारे में पूरी जानकारी पुलिस थाने में देते हैं।

संथालों के जीवन में धीरे-धीरे किस प्रकार परिवर्तन आ रहा है, आदिवासी बच्चे किस प्रकार लगन पढ़ रहे हैं आदि बातों की पूरी जानकारी वे पुलिस को देते। साइकिल मरम्मत करनेवाले ईश्वर को भी पुलिस ने खबरिया के रूप में नियुक्त किया है। दरोगा के हुक्म पर वह भाटागेड़ा के माँझी पाड़ा में चक्कर लगाता है। वह किस प्रकार पुलिस को खबर देता है इस संदर्भ में लेखिका लिखती है-"उसने खबर दी, "चांदो, कालीपद, भुंइमली-लड़के-लड़कियों को पढ़ाय रहे हैं। हाँ, चांदो जरा मारता भी है। हमका बोले, रात को काथा सुनकर जाना।"[7] इसप्रकार आदिवासी लोगों हलचलों के संदर्भ पूरी जानकारी पुलिस तक पहुँचाई जाती है।

शिक्षा तथा बाहरी जगत के संपर्क में आने आदिवासियों के जीवन में परिवर्तन आ रहे परिवर्तन का भी चित्रण प्रस्तुत कहानी में आया है। पहले आदिवासियों समेत पिछड़ी जातियों का जाति से अपमानजनक उल्लेख किया जाता है। आदिवासियों को लोग 'जंगली' आदि कहते थे। अब यह पिछड़ी जातियों द्वारा बर्दाश्त नहीं किया जाता है। इस संदर्भ में कहानी का पात्र शोभन दत्त कहता है-"उसे जंगली न कहें। आजकल समय बेहद खराब है! किस बात पर भड़क जाए, कौन कह सकता है? अब तो हाट का मोची तक फुत्कारने लगा है-खबरदार, बेटा-फेटा ना कहें। शराफत से बात करें।"[8] इस प्रकार आदिवासी समेत पिछड़ी जातियाँ भी अपमानजनक व्यवहार बर्दाश्त नहीं करती। इसे शिक्षा से ही आया परिवर्तन माना जा सकता है।

इस प्रकार आदिवासियों में शैक्षिक चेतना का चित्रण प्रस्तुत कहानी में मिलता है।

निष्कर्ष :

अंत में निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आज आदिवासी समाज शैक्षिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है। यही उनकी उन्नति के बीच का सबसे बड़ा रोड़ा है। वर्तमान समय में इस समाज में धीरे-धीरे शैक्षिक चेतना जग रही है। इस दृष्टि से कुछ आदिवासी लोग प्रयास कर रहे हैं लेकिन प्रस्थापित समाज को यह बात खलती हुई नजर आती है। इन्हीं सारी बातों का चित्रण महाश्वेता देवी के 'आदिवासी कथा' कहानी-संग्रह की 'तीर : 1993 : अंतर्राष्ट्रीय आदिवासी वर्ष में' कहानी में भी मिलता है। इसके माध्यम से लेखिका ने आदिवासियों की शैक्षिक स्थिति पर प्रकाश डाला है।

संदर्भ :

1. डॉ. अर्जुन चव्हाण, विमर्श के विविध आयाम, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2014, पृष्ठ 181
2. महाश्वेता देवी, आदिवासी कथा, तीर : 1993 : अंतर्राष्ट्रीय आदिवासी वर्ष में, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2004, पृष्ठ 65
3. वही, पृष्ठ 67
4. वही, पृष्ठ 68
5. वही, पृष्ठ 68
6. वही, पृष्ठ 71
7. वही, पृष्ठ 72
8. वही, पृष्ठ 71